टिप्पणी

4

पिल्लरी गीत तथा संचारी गीत

गीत वे सरल रचनायें हैं, जिन्हें प्रथम बार कर्नाटक संगीत सीखना प्रारंभ करने वाले विद्यार्थी साहित्यिक भाग के रूप में सीखते हैं। इन रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को राग, उसके संचार, स्वरस्थानों-स्वरों की विविधता, के चलन इत्यादि के विषय में स्पष्ट रूप से समझ प्राप्त होगी। इन रचनाओं में शब्दों का अधिक महत्त्व नहीं होता है। सामान्यतया ये देवताओं अथवा देवियों के गुणगान से संबंधित होते हैं। वे गीत (गीतं), जिनमें भगवान गणेश का गुणगान होता है, पिल्लरी गीत कहलाते हैं तथा अन्य संचारी गीत कहलाते हैं। गीतों का साधारणतः लय की तीन अवस्थाओं में बिना अधिक गमक और संगतियों के अभ्यास होता है। यहां पर राग मलहारी में एक पिल्लरी गीत और राग शुद्ध, सावेरी और मोहनं में दो संचारी गीत का उदाहरण दिया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, शिद्यार्थी :

- राग की मूल संरचना बता पायेगा;
- एक रचना को स्वरों एवं पदों सहित गा पायेगा;
- रचना को भिन्न लयों में प्रस्तुत कर पायेगा;
- आवाज के गुण को विकसित कर पायेगा।

4.1 पिल्लरी गीतं

राग मलहारी ताल रूपकं (चतुरस्रजाति)

15वें मेल जन्य

आरोहनं- स रि$_1$ म$_1$ प ध$_1$ स

अवरोहनं- स$_1$ ध$_1$ प म$_1$ ग$_2$ रि$_1$ स

यह एक औडव- षाडव राग है, अर्थात्

आरोहनं में स रि म प ध, केवल पांच स्वर तथा अवरोहनं में स ध प म ग रि, छह स्वर हैं।

वादी–रि   संवादी–ध

गीतं

1. श्री गननाथ – सिंदुरवरन
   करुनासागर – करीवदन
   लंबोदर – लकुमीकर
   अंबासुत – अमरविनुत (लंबोदर)

2. सिद्ध चरन गनसेवित
   सिद्धि विनायक ते नमोनम: (लंबोदर)

3. सकल विद्यादि पूजित
   सर्वोत्तम ते नमोनम: (लंबोदर)

1.	म प	ध सं सं रिं	रिं सं	ध प म प
	श्री	गननाथ	सिंदु	र – वर न
	रि म	प ध म प	ध प	म ग रि स
	करु	ना सा गर	करी	व द – न
	स रि	म, ग रि	स रि	ग रि स ,
	लं	बो- दर	ल कु	मी क र
	रि म	प ध म प	ध प	म ग रि स
	अं –	बा – सु त	अ म	र वि नु त
	स रि	म, ग रि	स रि	ग रि स,
	लं	बो–दर	ल कु	मी क र
2.	म प	ध सं सं रिं	रिं सं	ध प म प
	सिद्ध	च – र न	ग न	से – वि त
	रि म	प ध म प	ध प	म ग रि स
	सिद्धि	विना यक	ते	नमो नमो

(लंबोदर)

टिप्पणी

3.	म	प	|	ध	सं	सं	रिं	||	रिं	सं	|	ध	प	म	प	||
	स	क	|	ल	वि	द्या	–	||	–	दि	|	पू	–	जि	त	||
	रि	म	|	प	ध	म	प	||	ध	प	|	म	ग	रि	स	||
	स	–	|	र्वो – त्तम				||	ते –		|	नमो नमो				||

(लंबोदर)

4.2 संचारी गीतं

राग – शुद्ध सावेरी ताल – तिस्रजाति त्रिपुट

29 वें मेल जन्य

4.3 रागं – शुद्ध धन्यासी 28वें मेल जन्य

आरोहनं – स रि$_2$ म$_1$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं – सं$_1$ ध$_2$ प म$_1$ रि$_2$ स

यह एक औडव राग है, अर्थात आरोहनं में पांच स्वर तथा अवरोहनं में पांच स्वर हैं।

वादी–रि संवादी–ध, ग

गीतं

आनलेकर उन्नि पोलदि
सकल शास्त्र पुराण दीनं

ताल दीनं ताल परिगतु
रे रे सेतु वाह
परिगतं नाम जटा जूट

रिं	मं	रिं	|	रिं	सं	|	ध	सं	||	सं	,	सं	|	ध	प	|	म	प	||
आ	–	न	|	ले	–	|	क	र	||	उ	–	न्नि	|	पो	–	|	ल	दि	||
ध	ध	सं	|	ध	,	|	ध	प	||	प	म	रि	|	ध	ध	|	ध	प	||
स	क	ल	|	शा	–	|	स्त्र	पु	||	रा	–	ण	|	दी	–	|	नं	–	||
प	,	प	|	ध	ध	|	ध	प	||	प	,	प	|	म	प	|	ध	प	||
ता	–	ल	|	दी	–	|	नं	–	||	ता	–	ल	|	प	रि	|	ग	तु	||
प	म	रि	|	स	रि	|	स	रि	||	प	म	प	|	स	रि	|	स	रि	||
रे	–	रे	|	अ	–	|	–	–	||	अ	–	–	|	अ	–	|	–	–	||

टिप्पणी

प प ध | प प | म रि || रि स रि | म , | म , ||
अ – – | अ – | – – || से – तु | वा – | ह , ||
ध प ध | सं , | सं , || रिं रिं सं | ध प | म प ||
प रि ग | त – | नाम – || ज टा – | जू – | ट ||
ध ध सं | ध , | ध प || प म रि | ध ध | ध प ||
स क ल | शा – | स्त्र पु || रा – ण | दी – | नं – ||
प , प | ध ध | ध प || प , प | म प | ध प ||
ता – ल | दी – | नं – || ता – ल | प रि | ग तु ||
प म रि | स रि | स रि || प म प | स रि | स रि ||
रे – रे | अ – | – – || अ – – | अ – | – – ||
प प ध | प प | म रि || रि स रि | म , | म , ||
अ – – | अ – | – – || से – तु | वा – | ह , ||
ध प ध | सं , | सं , || रिं रिं सं | ध प | म प ||
प रि ग | तं – | नाम – || | | ||

राग – मोहनं

28वें मेल हरिकांभोजी जन्य

आरोहनं– स रि$_2$ ग$_2$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं– सं ध$_2$ प ग$_2$ रि$_2$ स

वादी– ग

संवादी–ध

संचार – गपगरिस, – रिधसरिग, – गरिगपध, – गधप, – गपधसरिगरि,
– गरिगपगरिस, – धसधप, – धपगपगरि, – सरिगपगरिस,

गीतं राग – मोहनं
ताल – रूपकं

वर वीना मृदुपानी वनरुहलोचनरानी
सुरु चीराबंबर वेणी सुरनु ता कल्याणी
निरुपम सुभगुन लोल नीरद जयप्रद शीले
वरद प्रिय रंगनायकी वंचित फल दायकी
सरसीजसन जननी जय जय जय जय वानी

टिप्पणी

रागं : मोहनं तालं : रूपकं

‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	गग	प	प	‖	धप	सं	सं	‖
	व र	वी	ना		मृदु		पानी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	रिस	धध	प	‖	धप	गग	रि	‖
	वन	रुह	लो		चन	रा	नी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	गप	धस	ध	‖	धप	गग	रि	‖
	सुरु	चीरा	बं		बर	वे –	णी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	गग	धप	ग	‖	पग	गरि	स	‖
	सुरनुता		कल		या –	– –	णी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	गग	गग	गरि	‖	पग	प	प	‖
	निरु	पम	सुभ		गुन	लो	ल	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	गग	धप	ध	‖	पध	सं	सं	‖
	नीर	दज	य		प्रद	शीले		
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	धगं	रिंरिं	संसं	‖	धसं	धध	पप	‖
	वर	द –	प्रिय		रग	ना –	यकी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	गप	धसं	धप	‖	धप	गग	रिसं	‖
	वं –	चित	फल		दा –	--	यकी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
‖	सरि	ग	ग	‖	प	ग	रि	‖

	सर	सी	ज		सन	जन	नी	
‖	x	x	v	‖	x	x	v	‖
	स रि	स ग	रि स		रि ध	स	स	
	जय	जय	जय		जय	वा	नी	

पाठगत प्रश्न

1. एक औडव- षाडव राग के नाम का उल्लेख कीजिये।
2. वे गीत जिनमें भगवान गणेश का गुणगान होता है, क्या कहलाते हैं?
3. शुद्ध सावेरी राग कौन से मेल की जन्य राग है?
4. किसी एक सात अक्षर काल अवधि युक्त ताल का नाम बताइये।

निर्देशित कार्य कलाप

1. सीखे गये गीतं तीन लयों में गाने का प्रयास करें।
2. आपके द्वारा सीखे गये गीतं के स्वरों के लिये स्वर वर्ण अभ्यासों को गायें।